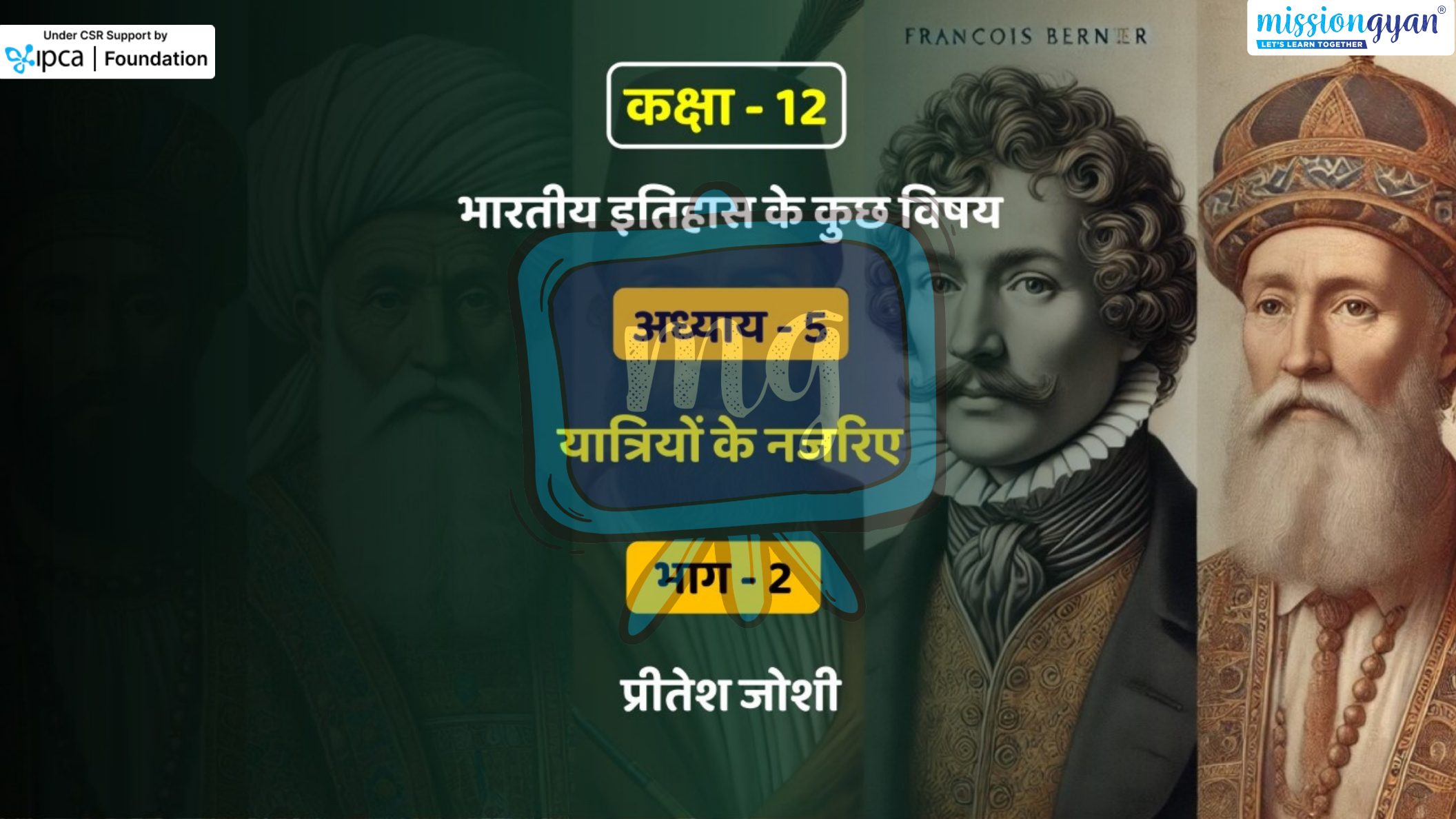
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 2

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

11 → अलबरूनी → किताब उल हिन्द

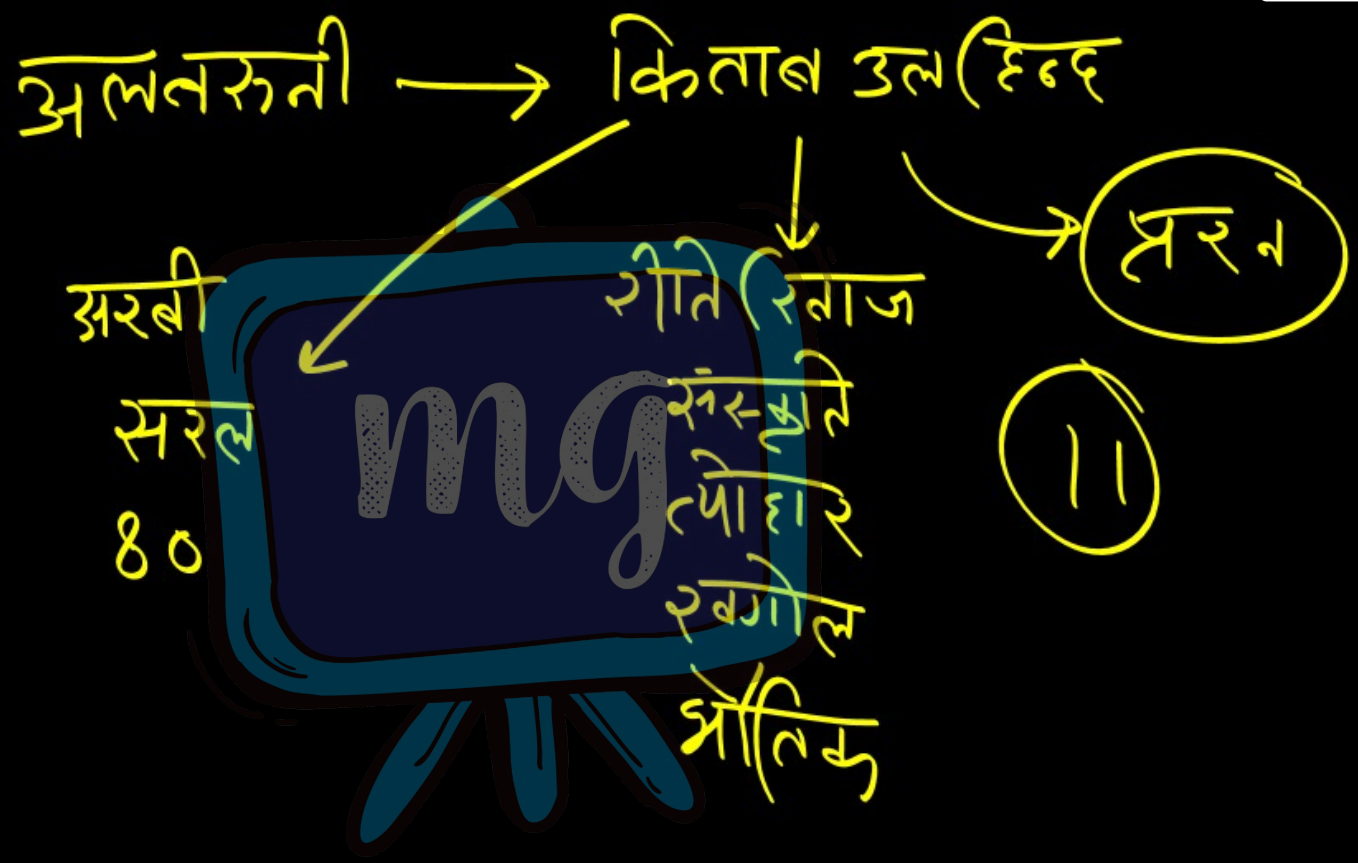
14 → इब्नबतूता → रिहला

17 → फ्रांस्वा बर्नियर → T.



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. किताब उल हिन्द कौनसी भाषा में लिखी गई थी?

a) संस्कृत
b) अरबी
c) हिन्दवी
d) इतालवी

CBSE
RBSE
अन्य

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

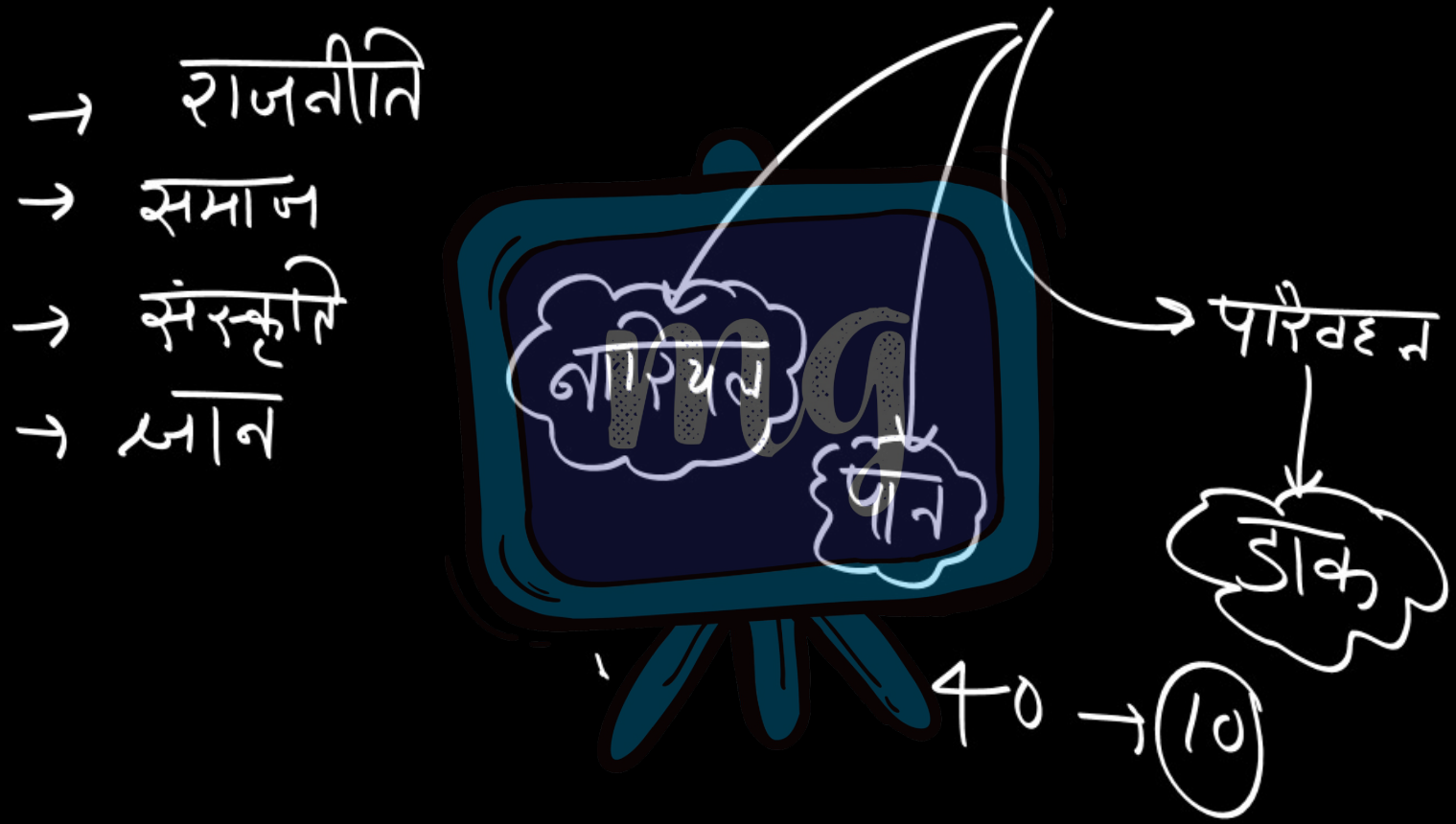


इब्न बतूता का रिह्ला

- इब्न बतूता मोरक्को (तैंजियर) से 14वीं शताब्दी में भारत आया था।
- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के समय भारत आया।
- इब्न बतूता द्वारा अरबी भाषा में लिखा गया यात्रा वृतान्त रिह्ला कहा जाता है।
- इसमें चौदहवीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में प्रचुर व रोचक जानकारियाँ प्राप्त होती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

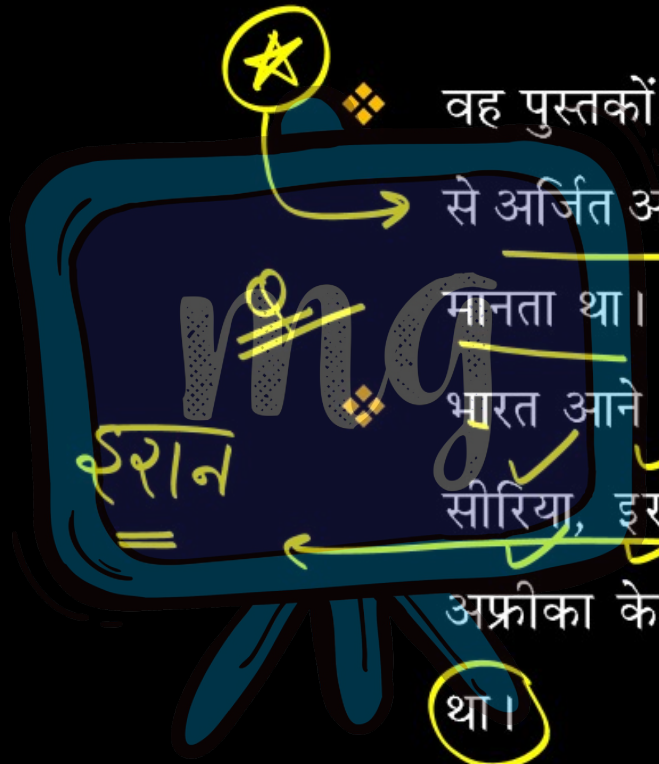


- इसका जन्म तैंजियर के सबसे सम्मानित व शिक्षित परिवारों में से एक, जो शरिया अथवा इस्लामी कानूनों पर अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध था, में हुआ था।
- इब्न बतूता ने कम उम्र में ही साहित्यिक व शास्त्ररूढ़ शिक्षा प्राप्त कर ली थी।
- इन्हें यात्राओं का शौक था, उसने नये-नये देशों व लोगों को जानने के लिए दूर-दूर की यात्राऐं की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मक्का



- वह पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान के स्थान पर यात्राओं से अर्जित अनुभव को ज्ञान का महत्वपूर्ण स्त्रोत मानता था।
- भारत आने से पूर्व वह मक्का की तीर्थ यात्रा, सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान तथा अफ्रीका के कई प्रदेशों की यात्रा कर चुका था।
- मध्य एशिया के रास्ते 1333 ई. में स्थल मार्ग से सिंध पहुँचा।

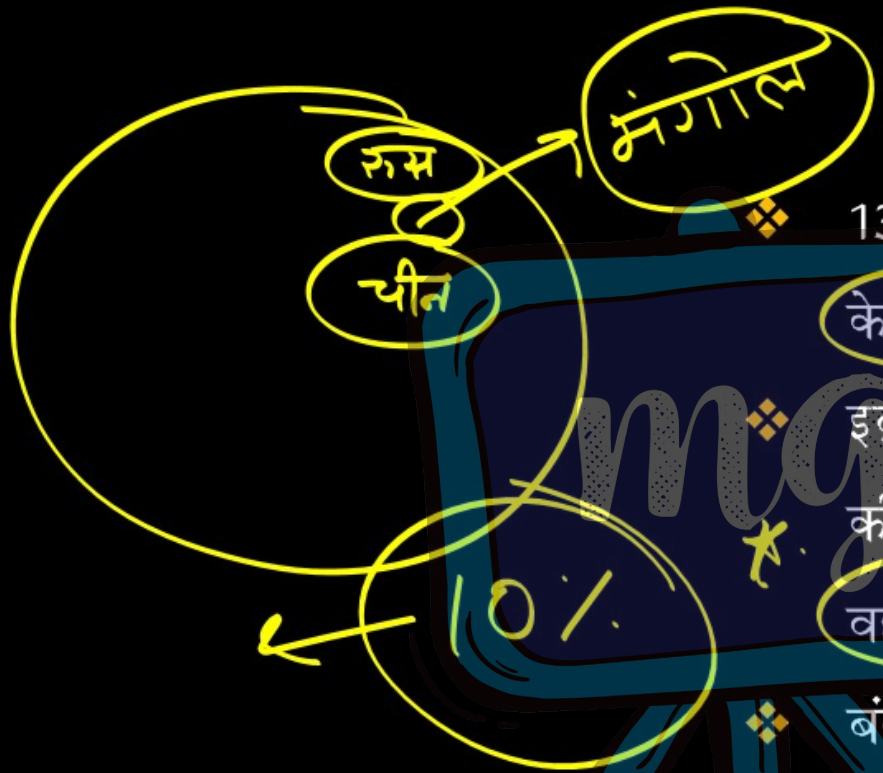
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की ख्याति से प्रभावित होकर मुल्तान व उच्छ के रास्ते दिल्ली पहुंचा।
- सुल्तान ने इब्न बतूता की विद्वता से प्रभावित होकर उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त कर दिया।
- सुल्तान से गलतफहमी होने पर उसे कारागार में डाल दिया गया।
- गलतफहमी दूर होने पर पुनः काज़ी पद पर पदस्थापित किया गया ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1342 में मंगोल शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में जाने का आदेश दिया।

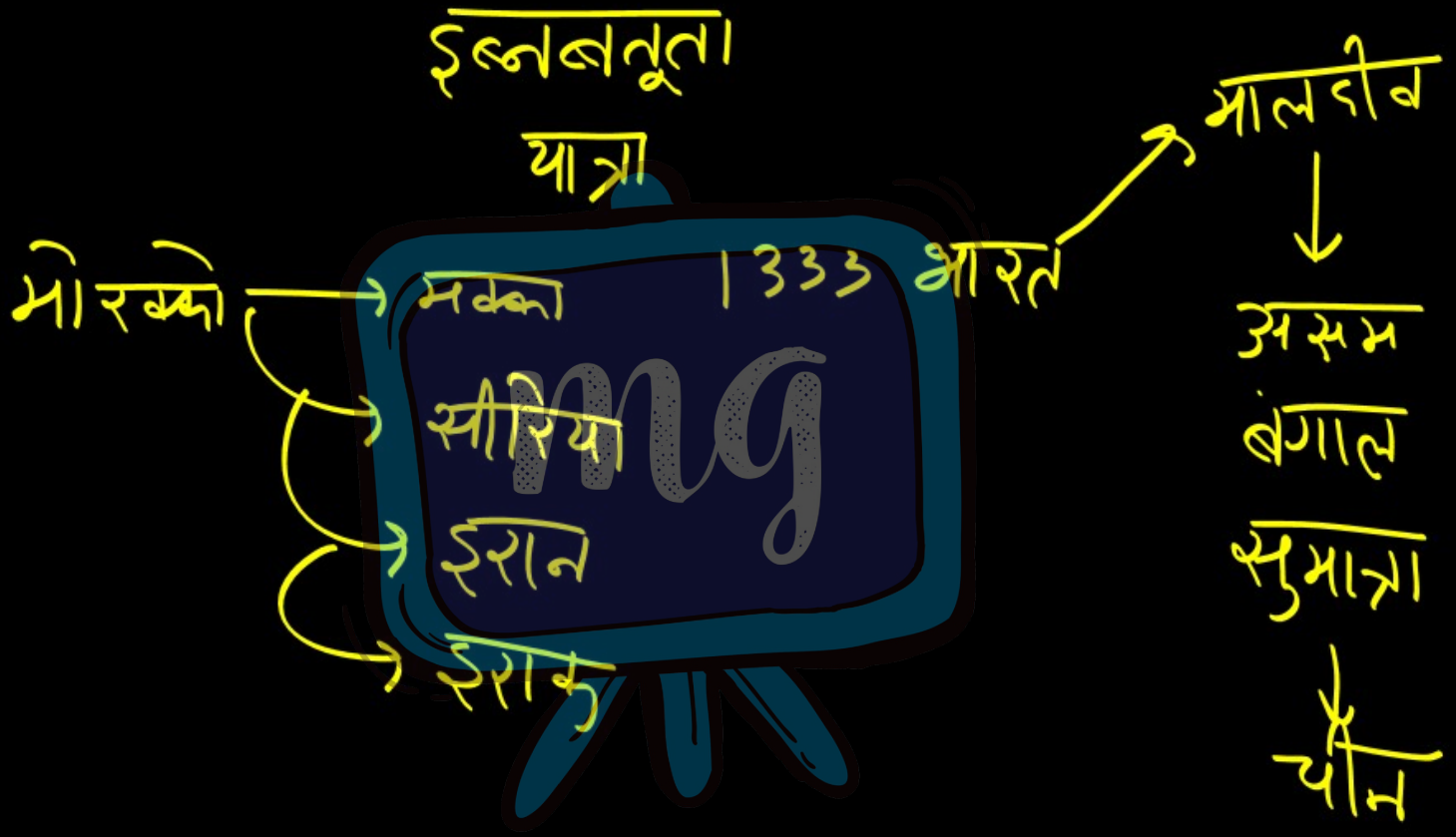
इब्न बतूता मध्य भारत के रास्ते मालाबार तट की ओर गया तथा वहां से मालद्वीप गया जहां वह 18 माह तक काजी के पद पर रहा।

बंगाल व असम की यात्रा की।

जहाज से सुमात्रा होते हुए चीनी बन्दरगाह जायतुन (आधुनिक नाम-क्वानझू) बन्दरगाह गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

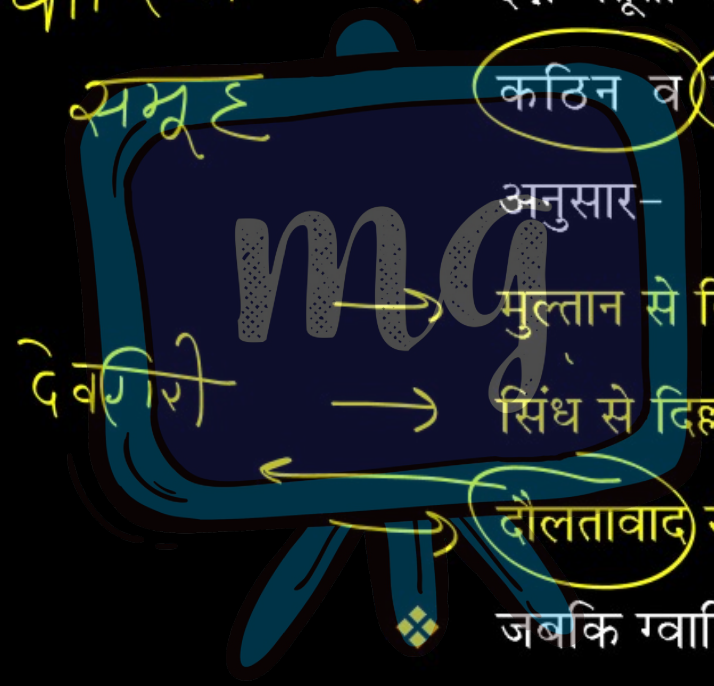
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 1347 ई. में चीन से वापसी।
- चीन के विषय में इब्न बतूता के वृतान्त की तुलना मार्को पोलो के वृतान्त से की जाती है। जिससे 13वीं शताब्दी में वेनिस से चलकर, चीन व भारत की यात्रा की थी।
- इब्न बतूता ने नवीन संस्कृतियों, लोगों, आस्थाओं, मान्यताओं आदि विषय पर सावधानी पूर्वक अपना वृतान्त लिखा है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

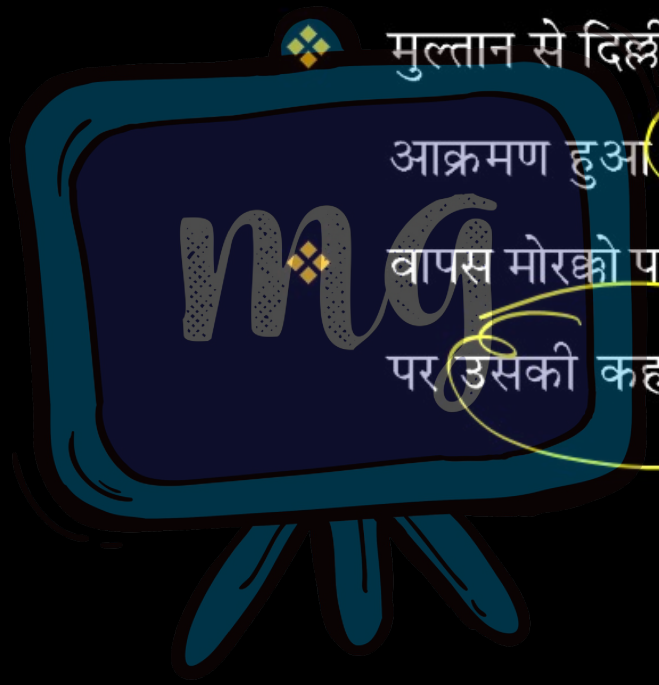
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता के अनुसार उस समय यात्रा करना कठिन व जोखिम भरा कार्य था, उसके अनुसार-
  - मुल्तान से दिल्ली - 40 दिन
  - सिंध से दिल्ली - 50 दिन
  - दौलतावाद से दिल्ली - 40 दिन
- जबकि ग्वालियर से दिल्ली की दूरी 10 दिन में तय की जा सकती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



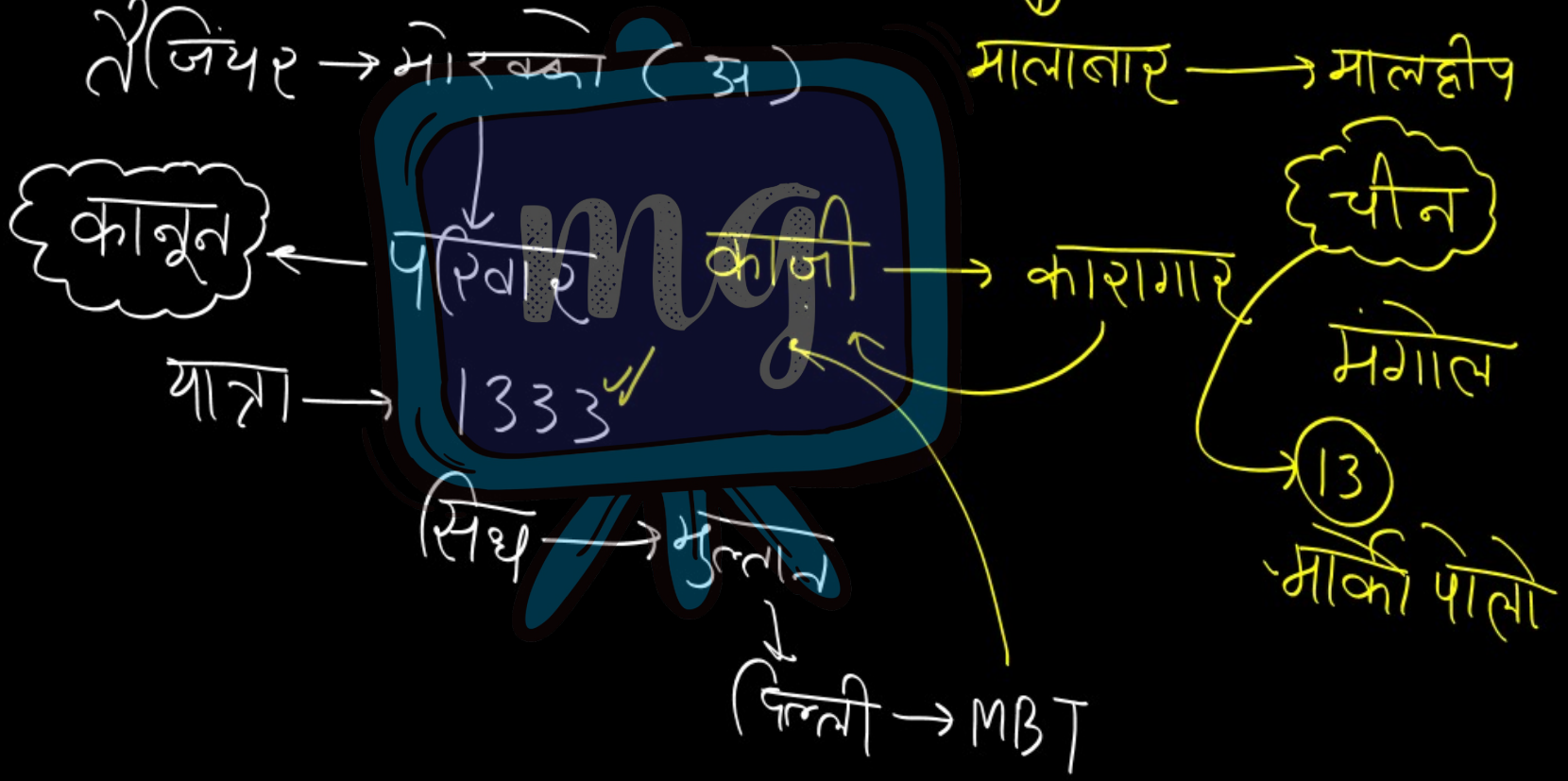
मुल्तान से दिल्ली यात्रा के दौरान उसके कारवाँ पर आक्रमण हुआ जिसमें वह घायल हो गया।

वापस मोरक्को पहुँचने पर स्थानीय शासक के निर्देश पर उसकी कहानियों को दर्ज किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

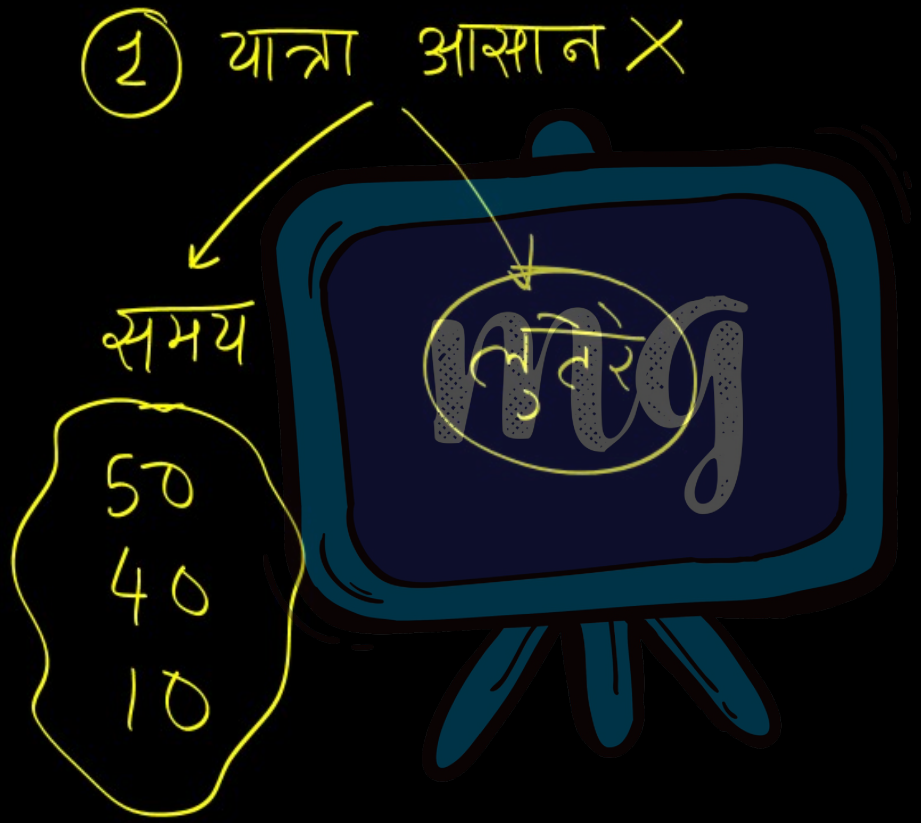
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता जीवन परिचय



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

घोंसले से निकलता पक्षी

यह रिह्ला से लिया गया एक उद्धरण है: अपने जन्म स्थान तैंजियर से मेरा प्रस्थान गुरुवार को हुआ... मैं अकेला ही निकल पड़ा, बिना किसी साथी यात्री... या कारवाँ के जिसकी टोली में मैं शामिल हो सकूँ, लेकिन अपने अंदर एक अधिप्रभावी आवेग और इन प्रसिद्ध पुण्यस्थानों को देखने की इच्छा जो लंबे समय से मेरे अंत:करण में थी, से प्रभावित होकर।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

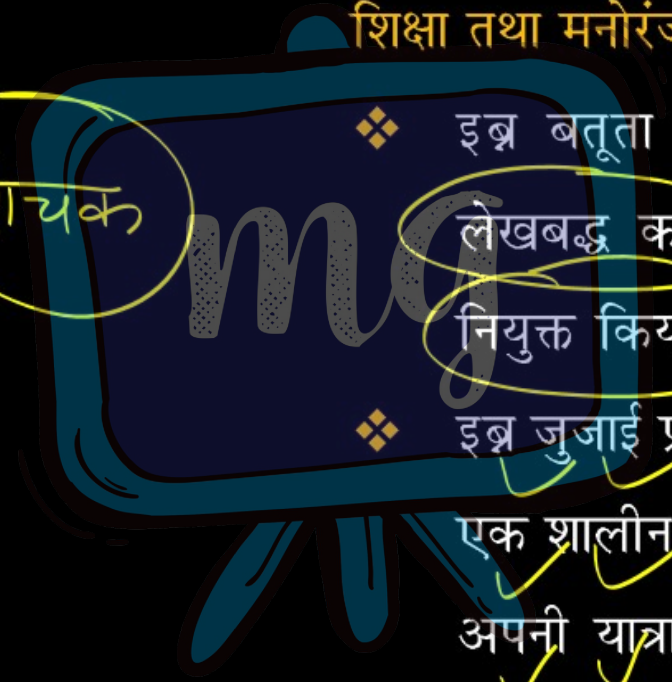
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इसलिए मैंने अपने प्रियजनों को छोड़ जाने के निश्चय को दृढ़ किया और अपने घर को ऐसे ही छोड़ दिया जैसे पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ देते हैं... उस समय मेरी उम्र बाईस वर्ष थी। इब्न बतूता 1354 में घर वापस पहुँचा, अपनी यात्रा आरंभ करने के लगभग तीस वर्ष बाद।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रा वृतान्त रोचक

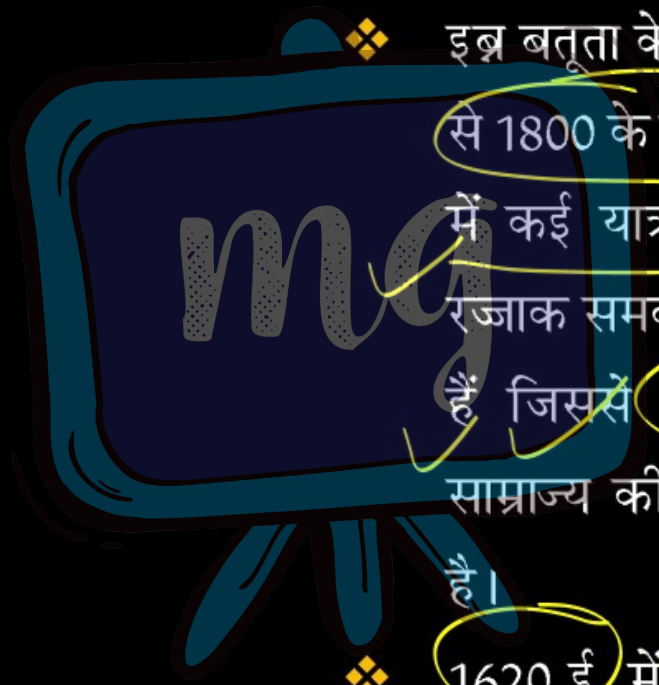


शिक्षा तथा मनोरंजन :-

- इब्न बतूता के यात्रा वृतान्तों/संस्मरणों को लेखबद्ध करने हेतु राजा ने इब्न जुजाई को नियुक्त किया।
- इब्न जुजाई प्रस्तावना में लिखता है कि राजा ने एक शालीन निर्देश दिया कि वे (इब्न बतूता) अपनी यात्रा में देखे गये शहरों का, अपनी स्मृति में बैठ गयी रोचक घटनाओं का एक वृतान्त लिखवायें।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता के पद चिन्हों पर चलते हुए 1400 से 1800 के मध्य भारत आये यात्रियों ने फारसी में कई यात्रा वृतान्त लिखे जिसमें अब्दुल रज्जाक समककंदी का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण हैं जिससे 15वीं शताब्दी में विजय नगर साम्राज्य की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- 1620 ई. में महमूद वली बल्खी – भारत से सम्मोहित होकर कुछ समय सन्यासी भी बन गये थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 1740 ई. में शेख अली हाजिन ने उत्तर भारत की यात्रा की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

